नई किरण

नई किरन

(शिक्षक संदर्भ पुस्तिका)

राज्य संदर्भ केन्द्र

साक्षरता निकेतन, लखनऊ– 226005

नयी किरन

(शिक्षक संदर्भ पुस्तिका)

रचना मण्डल

- डॉ० निरंजन कुमार सिंह
- डॉ० श्यामलाकान्त वर्मा
- डॉ० सरोजिनी कुलश्रेष्ठ
- श्री श्रीनाथ मिश्र
- श्री लायक राम 'मानव'
- श्री श्याम लाल
- श्री विश्वनाथ सिंह
- श्री लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'
- डॉ० त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल
- डॉ० नारायण दत्त शर्मा
- श्री सत्यदेव आजाद
- श्री यमुना प्रसाद त्रिपाठी 'धार'
- श्री गणेश शंकर चौधरी

आवरण एवं कला पक्ष

- के० जी० सिंह
- डी० वी० दीक्षित
- आनन्द सिंह

प्रकाशक

राज्य संदर्भ केन्द्र
साक्षरता निकेतन,
लखनऊ-226 005 (उ० प्र०)

मुद्रक

प्रतिभा प्रेस, नया गाँव, लखनऊ

मई 1990

अनुदेशक बन्धुओं से

इस प्रवेशिका के तीन भाग हैं— पहला, दूसरा और तीसरा। यह तीनों भाग पुस्तकों के रूप में अलग-अलग हैं। किन्तु अलग होते हुए भी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। तीनों को मिलाकर एक पूरा सेट बनता है। प्रौढ़ प्रतिभागियों को तीनों भाग अर्थात् तीनों प्रवेशिकाएँ क्रम से पढ़ाई जानी हैं।

पहला भाग

इस भाग में कुल 9 पाठ हैं। इन 9 पाठों में कुल 27 वर्ण और 10 मात्राएँ सिखाई गई हैं। 50 तक की गिनती दी गई हैं।

चेतना जागृति तथा व्यावसायिक दक्षता की दृष्टि से प्रत्येक पाठ प्रौढ़ों के जीवन से संबंधित किसी एक विषय पर आधारित है। किस पाठ में क्या पढ़ाना है, कितना पढ़ाना है, कैसे चर्चा करनी है— से सभी बातें प्रवेशिका के प्रारम्भ में दी गई विवरणिका में हैं। आप उसे पढ़ लें। इस तरह की विवरणिका तीनों भागों के प्रारम्भ में दी गई हैं।

दूसरा भाग

इसमें भी कुल 9 पाठ हैं। ये पाठ पहले भाग के पाठों से आगे के हैं। इन 18 पाठों में ही सम्पूर्ण वर्ण मात्राएँ एवं संयुक्ताक्षर सिखा दिए गए हैं। प्रत्येक पाठ के साथ गणित भी सिखाई गई है।

तीसरा भाग

तीसरे भाग में कुल 10 पाठ हैं। सभी 10 पाठ, पठन अभ्यास के रूप में हैं तथा राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में इंगित किसी न किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर आधारित हैं। तीसरे भाग के सभी पाठ, पिछले दो भागों में प्राप्त की गई दक्षता को पक्का करने के लिए हैं।

जाँच-पत्र

प्रत्येक भाग में तीन-तीन जाँच-पत्र दिए गए हैं। ये जाँच-पत्र प्रत्येक तीन अथवा चार पाठ के बाद दिए गए हैं। इन जाँच-पत्रों के आधार पर शिक्षार्थी की प्रगति का मूल्यांकन किया जाएगा तथा शिक्षार्थी स्वयं भी अपनी प्रगति का मूल्यांकन कर सकते हैं।

प्रमाण-पत्र :

प्रत्येक भाग के अन्त में प्रमाण-पत्र दिया गया है। पुस्तक की समाप्ति पर यह प्रमाण-पत्र शिक्षार्थी को दिया जाएगा।

विशेषताएँ :

प्रवेशिकाओं का यह सेट उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण हिन्दी भाषी क्षेत्र की विशेषताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इस क्षेत्र के जन-जीवन, कृषि, व्यवसाय, लोगों की रुचियाँ, आवश्यकताएँ, समस्याएँ, आमोद-प्रमोद, बोली, भाषा, संस्कृति आदि का समावेश आवश्यकतानुसार इन प्रवेशिकाओं में किया गया है। ये प्रवेशिकाएँ चर्चा पद्धति पर आधारित हैं। इनमें वर्णमाला पद्धति का क्रम नहीं अपनाया गया है।

जो प्रौढ़, पढ़े-लिखे नहीं हैं, उन्हें सबसे पहले अक्षर ज्ञान कराना है। यह अक्षर ज्ञान उस क्षेत्र की परिचित शब्दावली के आधार पर कराया गया है। प्रवेशिकाओं में शब्दावली का चयन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये शब्द (क) उनके जीवन/परिवेश से संबंधित हों, (ख) उनके जीवन के विविध कार्य क्षेत्रों— कृषि, व्यवसाय, शिल्प, लोक कला, संगीत, संस्कृति आदि से सम्बन्धित हों, (ग) आधुनिक जीवन के विकास की नई दिशाओं से सम्बन्धित हों, जैसे कृषि के नये साधन, नए बीज, उर्वरक, फसल सुरक्षा, ऊर्जा (सौर चूल्हा, आदि), परिवार कल्याण, जच्चा-बच्चा, पोषण, टीका आदि और विकास योजनाएँ, (घ) इनके माध्यम से राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में इंगित व्यावसायिक दक्षता, चेतना जागृति तथा राष्ट्रीय मूल्यों के पक्षों पर चर्चा की जा सके।

इन शब्दों के आधार पर अक्षर ज्ञान कराने का हमारा मूल उद्देश्य यह है कि प्रौढ़ आज की सामाजिक समस्याओं तथा विकास के नए-नए साधनों से परिचित हो सकें। उनकी व्यावसायिक कार्य कुशलता में वृद्धि हो। वे राष्ट्रीय विकास की मूलधारा से जुड़ सकें।

प्रौढ़ों द्वारा अर्जित ज्ञान तथा अनुभव का सार्थक उपयोग तभी हो सकता है, जब वे स्वयं अपने जीवन और सामाजिक निर्माण के लिए सक्रिय हों। प्रौढ़ों की सक्रियता और सहभागिता इन प्रवेशिकाओं के उचित उपयोग पर निर्भर है।

शिक्षण विधि :

ये प्रवेशिकाएँ वर्णमाला पद्धति पर नहीं हैं। वाक्य एवं शब्द पद्धति पर हैं। प्रत्येक पाठ के प्रथम पृष्ठ के नीचे कविता की दो पंक्तियाँ दी गई हैं। ये पंक्तियाँ प्रौढ़ों के जीवन, उनकी आजीविका, व्यवसाय, कला, संस्कृति से सम्बन्धित हैं। कविता की पंक्तियों में से ही एक या दो आधार शब्द लिए गए हैं। आधार शब्द के चयन में यह ध्यान रखा गया है कि उस शब्द का चित्र बन सके। इस आधार शब्द को ही हम मूल शब्द कहते हैं। कविता की पंक्तियों एवं मूल शब्द पर आधारित पाठ में दिए गए चित्र से शिक्षण प्रारम्भ करना है।

यह भी ध्यान रखना है कि वर्ण या अक्षर ज्ञान के पहले कविता की पंक्तियों, मूल शब्द तथा उसके चित्र के आधार पर शिक्षार्थियों के साथ उनके जीवन, परिवेश, कार्य और विचार पर चर्चा प्रारम्भ करें। इस चर्चा से ही उन्हें पढ़ने-लिखने के प्रति रुचि उत्पन्न होगी।

चर्चा :

चित्र पर चर्चा करते समय आप इस बात का विशेष ध्यान रखें कि चर्चा में प्रौढ़ प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी हो, अर्थात् वे अपनी बात खुलकर कह सकें। अनुदेशक की सफलता इस बात में है कि वह स्वयं कम से कम बोलें और प्रौढ़ों को अधिक से अधिक बोलने का अवसर दें। साथ ही यह भी ध्यान रखें कि प्रौढ़ जो बात कहते हैं, यदि उसमें कुछ जोड़ने की आवश्यकता है तो उसे अपनी ओर से जोड़ दें। प्रौढ़ यदि विषय से बाहर चर्चा करने लगें तो उन्हें सावधानी से मूल विषय पर ले आयें। सावधान रहें कि आपकी किसी बात से प्रौढ़ों के सम्मान पर आँच न आवे और वे चर्चा से सही निर्णय पर पहुँच सकें। संक्षेप में–

(1) चित्र में जो कुछ दिखाई दे रहा है, उस पर प्रश्न करें।

(2) चित्र में जो चीजें दिखाई गई हैं, उनमें कुछ को प्रौढ़ पहचानते होंगे, और कुछ को नहीं पहचानते होंगे। जिन्हें वे पहचानते हैं, उनके बारे में उनसे प्रश्न करें। जिन्हें वे नहीं पहचानते उनके बारे में उनको जानकारी दें।

(3) चर्चा में सभी प्रौढ़ प्रतिभागियों को बोलने का अवसर दें। सभी को अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित करें। आपकी सफलता की एक बड़ी कसौटी यह है कि प्रौढ़ों का मौन टूटे और वे सामूहिक चर्चा में खुलकर भाग लें।

(4) चर्चा करते समय आप उसी बोली में प्रश्न करें, जिस बोली में प्रौढ़ बोलते-चालते हैं। इससे वे बिना संकोच के आपके प्रश्न का उत्तर दे सकेंगे।

चित्र के आधार पर चर्चा हो जाने पर उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाना आरम्भ करें।

साक्षरता शिक्षण :

साक्षरता शिक्षण में तीन बातें शामिल हैं– पढ़ना, लिखना और गणित। साक्षरता शिक्षण देते समय अनुदेशक द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया इस प्रकार होगी।

(1) चित्र।
(2) मूल वाक्य।
(3) मूल शब्द।
(4) मूल शब्द में आये हुए वर्ण अक्षर मात्राएँ।
(5) इन वर्णों और मात्राओं से बने हुए शब्द।
(6) इन शब्दों के आधार पर पढ़ने के लिए बने वाक्य तथा पठन अभ्यास।

अनुदेशक पुनः पाठ में दिए गए चित्र की ओर संकेत करें। प्रौढ़ को बतावें कि जिस चीज का यह चित्र है, उसका नाम नीचे लिखा है। मूल शब्द के नीचे उँगली रखकर बताएँ। प्रौढ़ों से कहें कि वे प्रवेशिका में उस शब्द को देखें।

(क) पढ़ना सिखाना :

(1) उस शब्द को श्याम पट पर लिख दें।
(2) उस शब्द का शुद्ध उच्चारण करें और प्रौढ़ों से करायें।
(3) उच्चारण करते समय शब्द में आई हुई ध्वनियों का अलग-अलग उच्चारण करें और प्रौढ़ों से कराएँ।
(4) प्रत्येक ध्वनि से सम्बन्धित वर्ण की पहचान कराएँ और उनका लिखित रूप बताएँ।
(5) अगर मूल शब्द में कोई मात्रा आई हो तो मात्रा को लिखें, उससे सम्बन्धित स्वर को नहीं। जैसे– मकान शब्द में "क" वर्ण पर "ा" की मात्रा लगाई गई है, इसलिए यह मात्रा "ा" लिखें और पढ़ाएँ। "आ" की चर्चा अभी न करें।

(6) नया पाठ पढ़ाते समय उसमें आए वर्णों और मात्राओं को ही श्याम पट पर लिखें, पहले सिखाए हुए वर्णों, और मात्राओं को नहीं।
(7) सीखे हुए वर्णों और मात्राओं से बनने वाले अन्य शब्दों को श्याम पट पर लिखें और उन्हें पढ़ना सिखाएँ।
(8) हर प्रौढ़ से अपनी किताब में प्रत्येक वर्ण या मात्रा के सामने लिखे शब्दों में से उस वर्ण के नीचे उँगली रखकर पहचान करवाएँ।
(9) जब प्रौढ़ इन वर्णों और मात्राओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएँ, तब उनसे पाठ में दिए गए पूरे-पूरे शब्दों तथा वाक्यों को भी पढ़वाएँ। ध्यान रखें कि वे शुद्ध उच्चारण के साथ ही पढ़ें।

(10) पाठ के अन्त में दी गई पठन-सामग्री को अनुदेशक पहले स्वयं पढ़ कर सुनावें। उसके बाद प्रौढ़ों से उसे पढ़वाएँ। सम्भव है,प्रौढ़ पूरी सामग्री एक बार न पढ़ सकें, इसलिए उनसे पहले थोड़ी-थोड़ी सामग्री पढ़वाएँ। फिर पूरा अभ्यास पढ़वाएँ। पढ़ने का मौका हर एक को दें।

(ख) लिखना सिखाना :

लिखना सिखाने के लिए पाठ के साथ ही अभ्यास दिए गए हैं। उन अभ्यासों को कैसे पूरा किया जायेगा, इसके लिए निर्देश भी दिए गए हैं। उनको पढ़ लें और उनके अनुसार पढ़ने तथा लिखने का अभ्यास कराते रहें।

लिखना सिखाने के लिए सबसे पहले स्लेट पर लिखना सिखायें। जब स्लेट पर लिखने का अभ्यास हो जाए तो उसके बाद पेंसिल से पुस्तक में दिए गए अभ्यासों को पूरा करायें।

अक्षर की बनावट के क्रम को ध्यान में रखते हुए अक्षर के अलग-अलग घुमाव (स्ट्रोक) दिए गए हैं। इससे लिखना सिखाना आसान रहेगा। अनुदेशक उन घुमावों को श्याम पट पर लिखकर प्रौढ़ों से स्लेट पर लिखने का अभ्यास करायें। उसके बाद पुस्तिका के पाठों में अभ्यास करायें।

इमला लिखाना :

जब प्रौढ़ थोड़ा-थोड़ा सीख जायें तो उन्हें इमला लिखाएँ। देख-देखकर लिखने तथा इमला लिखने का प्रतिदिन अभ्यास करायें।

जितना कुछ प्रवेशिका में दिया गया है, लिखाई-पढ़ाई में उतना ही पर्याप्त नहीं है। अलग से भी लिखायें। उनके व्यवहार में आने वाली चीजें लिखवाएँ।

साफ-सुथरी लिखावट पर विशेष ध्यान दें। लिखने की गति पर बराबर ध्यान रखें। प्रवेशिकाएँ समाप्त होने के बाद प्रौढ़ों में कम से कम 10 शब्द प्रति मिनट की गति से देख-देखकर लिखने की गति आना चाहिए।

गणित सिखाना :

आपने यह देखा होगा कि प्रौढ़ को गिनना आता है, पर वह अपनी गिनती को लिख नहीं सकता तथा अपनी गणित सम्बन्धी समस्या को लिखकर हल नहीं कर सकता है। प्रवेशिका में दूसरे पाठ से गिनतियाँ लिखी गई हैं। उनके लिखने का उद्देश्य है कि आप उस पाठ पर चर्चा करने, पढ़ना-लिखना सिखाने के बाद गिनती को पहचानना तथा लिखना भी सिखाएँ।

(1) दूसरे पाठ से गिनती प्रारम्भ करके आगे धीरे-धीरे गिनतियों की संख्या बढ़ा दी गई हैं। गिनती सिखाने में भी वही क्रम अपनाएँ जो पढ़ना-लिखना सिखाने में। अर्थात्

पहले पढ़ना या पहचानना सिखाएँ, फिर लिखना।

(2) दूसरे भाग की प्रवेशिका में गणित सिखाने के अभ्यास दिए गए हैं। उसमें दिए गए निर्देशों के अनुसार गणित सिखाएँ।

प्रवेशिका के पाठ पढ़ाने का एक उदाहरण

नई किरन प्रवेशिका के पहले भाग के पहले पाठ को पढ़ाने का नमूना दिया जा रहा है।

चित्र और चर्चा :

इस प्रवेशिका का पहला पाठ मकान है। पाठ में उसका चित्र दिखाएँ और इस ढंग से प्रश्न पूछें।

(क) इस चित्र में आप क्या देख रहे हैं ?

(ख) यह किसका चित्र है ?

प्रौढ़ बताएँगे कि मकान का चित्र है। यदि प्रौढ़ यह न बता पाएँ कि मकान है तो आप स्वयं बता दें कि यह मकान का चित्र है। अब उनसे मकान के बारे में चर्चा कीजिए। इस चर्चा में मुख्य रूप से निम्नलिखित बातें उठाई जायँ :

(I) मनुष्य के पास मकान होना क्यों जरूरी है ?

(II) मानव-जीवन के विकास में मकान का क्या महत्त्व है ?

(III) अच्छा मकान किसे कहते हैं ?

(IV) रहने के लिए ठीक मकान न होने से क्या-क्या परेशानियाँ होती हैं ?

(V) मकान को साफ-सुथरा रखना क्यों जरूरी है। उसके लिए हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

(VI) मकान बनाने के लिए सरकार की ओर से क्या सहायता और सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं ?

इस चर्चा में प्रतिभागियों को भाग लेने के लिए पूरा अवसर दिया जाय। उनसे प्रश्न किये जायँ और उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दिया जाय। प्रत्येक पाठ के मुख्य विषय से संबंधित जानकारी इसी पुस्तक के खण्ड 'ब' में दी गयी है।

अक्षर ज्ञान और पढ़ना

(क) चित्र के आधार पर पाठ के मूल शब्द "मकान" पर प्रतिभागियों का ध्यान आकृष्ट कीजिए। उन्हें बताइए कि यह "मकान" शब्द लिखा हुआ है। प्रतिभागियों से "मकान" शब्द का उच्चारण कराइए।

(ख) मकान का उच्चारण कराते हुए उसकी प्रत्येक ध्वनि का उच्चारण अलग-अलग कराइए और उनकी पहचान कराइए, जैसे– म क ा न ।

(ग) मकान की पहचान अच्छी तरह हो जाने पर इन वर्णों से बने हुए, जो अन्य शब्द दिए गए हैं उनकी पहचान कराइए। उनको शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ाइए, जैसे– मन, मान, मामा, कम, काम।

आगे के पाठों में दिए हुए शब्दों के अतिरिक्त यदि अन्य कोई शब्द बन सके, तो प्रतिभागियों से उन्हें बनवाइए। स्वयं भी ऐसे शब्द बनाकर उन्हें प्रोत्साहित कीजिए। पहले पाठ में शब्दों के अतिरिक्त वाक्य भी हैं– मामा का काम। मामा का मकान आदि। शब्दों का पढ़ना सीख लेने के बाद प्रतिभागियों से इस सामग्री को पढ़वाइए और पढ़ने का अभ्यास कराइए।

लिखना :

मूल शब्द मकान का एक-एक वर्ण तथा उसमें आई मात्रा मकान श्याम पट पर लिखें। फिर सभी प्रतिभागियों से अपनी-अपनी स्लेट पर लिखने के लिए कहें। अभ्यास में प्रत्येक वर्ण को लिखने का ढंग बताया गया है। अनुदेशक स्वयं भी श्याम पट पर उसी ढंग से लिखें और प्रतिभागियों से भी उसी प्रकार लिखाएँ। जब प्रतिभागी शब्द के वर्ण और मात्राओं को अलग-अलग लिखना सीख जाएँ तो फिर से पूरा शब्द मकान लिखाएँ। जब उन्हें स्लेट पर लिखने का अच्छी तरह अभ्यास हो जाए तब अभ्यास पुस्तिका पर लिखा दें। अन्त में प्रवेशिका में दिए गए शब्दों और वाक्यों को पढ़वाएँ और लिखवाएँ।

गिनती :

इस पाठ में गिनती नहीं दी गई है। वह दूसरे पाठ में दी गई है। उसका ज्ञान कराएँ। पहले श्याम पट पर स्वयं लिखें, फिर प्रतिभागियों से स्लेट पर उसकी नकल करने के लिए कहें। उन्हें गिनती के अंक पहचनवाएँ और पढ़ने का अभ्यास करावें।

नोट– ऊपर प्रवेशिका के पहले पाठ को पढ़ाने के सम्बन्ध में आवश्यक बातें बताई गई हैं। अनुदेशक इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ें और आगे के पाठों को भी इसी विधि से पढ़ाएँ।

खण्ड—ब

आपको पहले ही बताया जा चुका है कि यह प्रवेशिका प्रौढ़ों की समस्याओं पर आधारित है। ये समस्याएँ उनके आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और दैनिक जीवन से चुनी गयी हैं। पहले और दूसरे भाग में सम्पूर्ण लिपिचिह्न सिखा दिए गए हैं। जिन पाठों में लिपि चिह्न सिखाये गये हैं, उनकी कुल संख्या 15 है। इन 15 पाठों में मुख्य विषय क्या हैं? उसके चर्चा बिन्दु क्या हो सकते हैं? इसका विवरण इस प्रकार है :—

भाग : 1

पाठ 1 — आवास : घरों के प्रकार, महत्त्व, आदर्श घर, हवा, रोशनी की व्यवस्था, मकान बनाने के लिए सरकारी सहायता।

पाठ 2 — कृषि : कृषि का महत्त्व, अधिक उपज प्राप्त करने के लिए जरूरी बातें, खाद का महत्त्व, रसायनिक खाद, हरी खाद, गोबर की खाद, सिंचाई के साधन।

पाठ 3 — कृषि : सघन खेती, हल-बैल का उपयोग, खेत जोतने के आधुनिक यन्त्र आदि।

पाठ 4 — पशुपालन : गाय पालने से लाभ, गायों की नस्ल सुधार, पशुओं में होने वाली बीमारियाँ, गायों का रख-रखाव, गाय खरीदने के लिए सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाएँ।

पाठ 5 — बागवानी : भोजन में फलों का महत्त्व, आम की बागवानी, आम की फसल के मुख्य रोग एवं कीट, उनसे बचाव, अनार एवं केले का उपयोग तथा बागवानी।

पाठ 6 — कुटीर उद्योग : हथकरघा उद्योग का महत्त्व, उसके लिए खादी ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा मिलने वाली सुविधाएँ।

पाठ 7 — कुटीर उद्योग : ऊन उद्योग, अच्छी नस्ल की भेड़ें, ऊन से बनने वाली चीजें, ऊन उद्योग के लिए खादी ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा मिलने वाली सुविधाएँ।

पाठ 8 — नर-नारी समानता : परिवार में नारी का महत्त्व, महिलाओं की जिम्मेदारियाँ, महिलाओं को आगे बढ़ाने में पुरुषों का कर्त्तव्य, महिलाओं की उन्नति के लिए काम करने वाली संस्थाएँ।

पाठ 9 लोकतंत्र : पंचायतों का महत्त्व, पुरानी पंचायतों और आज की पंचायतों में अन्तर, ग्राम सभा, ग्राम पंचायत और न्याय पंचायत की गठन प्रक्रिया तथा उनके कार्य, ग्राम पंचायत की आमदनी के स्रोत।

भाग : 2

पाठ 1 राष्ट्रीय एकता : लोकतंत्र की विशेषताएँ, भाषण की स्वतंत्रता, राष्ट्रीय एकता का महत्त्व।

पाठ 2 परिवेश/पर्यावरण : मनुष्य की प्रमुख आवश्यकताएँ, घर की सफाई, लिपाई-पुताई, धुएँ से बचाव, आस-पास की सफाई।

पाठ 3 मनोरंजन : लोक गीतों का महत्त्व, मुख्य वाद्य यंत्र।

पाठ 4 रीति रिवाज : शिशु जन्म पर मनाई जाने वाली खुशियाँ, बच्चे के संस्कार, छठी का संस्कार, ऐपण का महत्त्व।

पाठ 5 गृहवाटिका : भोजन में साग सब्जियों का महत्त्व, गृहवाटिका की देख-रेख, गृहवाटिका से लाभ, अंगूर की खेती के लिए प्राप्त होने वाली सुविधाएँ।

पाठ 6 साक्षरता : शिक्षा का महत्त्व, पढ़े-लिखे और अनपढ़ व्यक्ति में अन्तर, पत्र का महत्त्व, निरक्षर प्रौढ़ों को साक्षर करने के लिए सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाएँ।

टिप्पणी : शिक्षक संदर्भ पुस्तिका के खण्ड 'ब' में उपर्युक्त पाठों के विषयों से सम्बन्धित विस्तृत सामग्री दी गई है।

भाग : 1

पाठ 1

मकान

मनुष्य के लिए भोजन और वस्त्र के अलावा रहने के लिए मकान सबसे जरूरी है। अपना मकान रहने पर वह चैन की साँस लेता है। कहीं से भी परिश्रम करके थका-हारा आकर घर में विश्राम करता है। मकान अच्छा हो, साफ-सुथरा हो तो मनुष्य सुख-सुविधा का अनुभव करता है।

आज मनुष्य ने जो प्रगति की है, उसके मूल में मकान की व्यवस्था ही रही है। प्राचीन काल में मनुष्य, पेड़ों के नीचे या पहाड़ की गुफाओं में रहा करता था। धीरे-धीरे बाद में सर्दी, गर्मी और वर्षा से बचने के लिए वह मकान बनाकर रहने लगा। मकान बनने पर ठीक से पारिवारिक जीवन की शुरुआत हुई। धीरे-धीरे मानव जीवन का विकास होता गया।

आज भी मकान हमारे जीवन की मूल आवश्यकता है। मकान न रहने पर मनुष्य को अनेक परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं। सर्दी, गर्मी, वर्षा आदि से वह अपनी रक्षा नहीं कर पाता। पारिवारिक जीवन भी ठीक से नहीं बिता पाता। हमारा मकान हमारे लिए अधिक से अधिक उपयोगी हो, इसके लिए कुछ चीजों का ध्यान रखना आवश्यक है। मकान इस तरह का होना चाहिए कि उसमें रोशनी और हवा अच्छी तरह पहुँच सके। इसके लिए यथासंभव घर का मुँह उत्तर या पूरब की दिशा की ओर रखा जाता है। हवा और प्रकाश के लिए दोनों ओर खिड़कियाँ अवश्य होनी चाहिए। खिड़की एक ही ओर है तो हवा आर-पार नहीं जाती। साफ तथा ताजी हवा नहीं मिल पाती। प्रकाश और हवा से घर का वातावरण स्वच्छ रहता है। कीड़े-मकोड़े नहीं पैदा हो पाते और बीमारियों का खतरा भी कम रहता है।

घर ठीक बना हो, इतना ही काफी नहीं है। उसे ठीक रखना भी पड़ता है। इसके लिए नियम से सफाई होनी चाहिए। झाड़ू रोज लगे, जाले निकाले जाएँ। अगर घर कच्चा है तो उसे हफ्ते में कम से कम एक बार गोबर-मिट्टी से अवश्य लीपा जाए। जानकार गृहणियाँ लीपने के बाद अल्पना बनाकर घर की सुन्दरता और भी बढ़ा देती हैं।

घर की व्यवस्था उसमें रहने वालों पर निर्भर करती है। घर में बच्चे भी होते हैं, बड़े भी। बच्चों में चीजों को सँभालकर रखने की आदत डालनी पड़ती है। इसका ध्यान रखना पड़ता है कि वे अपना खाना ठीक जगह पर खाएँ। भोजन जमीन में या कपड़ों पर न

गिराएँ। जूठे बर्तन ठीक जगह पर रखें। बड़ों को यह भी देखना पड़ता है कि बच्चों के खेलने का सामान इधर-उधर बिखरा न हो। वे ऐसी चीजें न खेलें, जिनसे घर गंदा हो। घर का सामान ठीक जगह रखा जाए। जहाँ तक हो सके करीने से सजाकर रखा जाए। यह जिम्मेदारी बड़ों की अधिक है। उन्हीं को देखकर बच्चे सीखते हैं।

घर में अगर खाना लकड़ी जलाकर बनता है तो धुएँ से घर काला पड़ जाता है। इससे लोगों की आँखें खराब होने का भी खतरा रहता है, इसलिए चूल्हे का धुआँ निकलने के लिए छत में चिमनी लगाना जरूरी है। नए ढंग का धूम्र रहित चूल्हा सबसे अच्छा रहता है। इससे महिलाओं की न तो आँखें खराब होती हैं और न फेफड़े।

घर की सफाई के लिए जरूरी है कि नहाने व बरतन धोने का पानी जमा न रहे। उसे नाली बनाकर घर से बाहर निकाल देना चाहिए। इस नाली के किनारे कभी-कभी चूना डाल दें, तो कीड़े मर जाते हैं।

शौच का स्थान बना लेना चाहिए। रास्ते के किनारे बच्चों को शौच के लिए न बैठाना चाहिए। इसी प्रकार पशुओं के बाँधने की जगह साफ रखी जाए। गोबर, घर से दूर गड्ढे में जमा किया जाए।

सबसे जरूरी बात यह है कि पूरे गाँव या मुहल्ले की सफाई का ध्यान रखें। अपना घर-आँगन बुहार कर कूड़ा-करकट ऐसी जगह न डालें, जिससे दूसरे के घर के पास गंदगी फैले। सब लोग अपना घर-बाहर साफ रखेंगे, तभी सब सुखी और स्वस्थ रहेंगे।

सरकार द्वारा कुछ ऐसी योजनाएँ लागू की गयी हैं जिनकी सहायता से लोगों के पास अपना मकान हो सकता है। इसके लिए सरकार द्वारा निर्बल वर्ग आवास, इंदिरा आवास तथा आवास विकास परिषद् आदि की स्थापना की गई है। इन योजनाओं के अन्तर्गत सरकार द्वारा लोगों को आर्थिक सहायता देकर अपना मकान बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। अच्छे भवन-निर्माण को ध्यान में रखकर मकान बनाए जा रहे हैं। जिन लोगों के पास अपना मकान नहीं है, उन्हें इस सुविधा का लाभ उठाना चाहिए।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. मनुष्य के पास मकान होना क्यों जरूरी है ?
2. मानव-जीवन के विकास में मकान का क्या महत्त्व है ?
3. अच्छा मकान किसे कह सकते हैं ?
4. रहने के लिए ठीक मकान न होने से क्या-क्या परेशानियाँ होती हैं ?
5. मकान को साफ-सुथरा रखना क्यों आवश्यक है और उसके लिए हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
6. मकान बनाने के लिए सरकार की ओर से क्या सहायता और सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं ?

पाठ 2

खाद पानी

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की लगभग अस्सी प्रतिशत जनसंख्या गाँव में रहती है। खेती ही उनका प्रमुख व्यवसाय है। लोगों का रहन-सहन और उनकी खुशहाली सब कुछ कृषि पर निर्भर करती है। खेती की पैदावार अच्छी होगी, तभी लोग सुखी रह सकते हैं।

कृषि की उपज बढ़ाने के लिए अच्छी भूमि होनी चाहिए। उन्नत बीजों का ही इस्तेमाल होना चाहिए। समय से खाद और पानी का उचित प्रबंध भी आवश्यक है, तभी लाभ हो सकता है।

अधिक पैदावार के लिए खेत में संतुलित खादों का प्रयोग बहुत जरूरी है। स्वास्थ्य के लिए जिस तरह से भोजन आवश्यक है, इसी तरह से पौधों के लिए खाद की आवश्यकता होती है। मिट्टी में लगातार खेती करने से उसकी ताकत कम हो जाती है। इस कमी को पूरा करने के लिए खाद डाली जाती है। खेत में पोटाश, नत्रजन और फास्फोरस की कमी होने से फसल मारी जाती है। उसमें तरह-तरह की बीमारियाँ लग जाती हैं। यह कमी खाद डालकर पूरी की जाती है।

किस खेत में कौन-सी खाद कितनी मात्रा में डाली जाए, यह जानना आवश्यक है। इसलिए खाद का चुनाव करने से पहले खेत की मिट्टी की जाँच कराना आवश्यक है। यह जाँच मुफ्त में की जाती है। इसके लिए ग्राम विकास अधिकारी की सहायता लेनी चाहिए। इस जाँच के बाद जो खाद बताई जाए, उसी का सही मात्रा में उपयोग करना चाहिए।

खादें कई प्रकार की होती हैं। रसायनिक खादों में यूरिया, पोटाश, सुपर फास्फेट, अमोनियम सल्फेट, एन. पी. के. आदि शामिल हैं। इसके अलावा गोबर की खाद, मल की खाद, कम्पोस्ट खाद (कूड़े-कचरे को सड़ाकर), हरी खाद (सनई, ढैंचा), मिल की खाद, (चीनी मिलों से मिलने वाली) हड्डी की खाद तथा खली आदि का भी प्रयोग होता है। गोबर गैस संयंत्र से जो खाद निकलती है, वह गोबर की साधारण खाद से अधिक उपजाऊ होती है।

मिट्टी की ताकत से सदा अच्छी फसल मिल सकती है, इसलिए मिट्टी की जाँच के बाद रसायनिक खादें तो देनी ही चाहिए। गोबर की खाद, कम्पोस्ट और हरी खाद भी देते रहना चाहिए। ये खादें किसान अपने घर में तैयार कर सकते हैं।

रसायनिक खाद सहकारी समितियों तथा ब्लाक से छूट पर मिलती है,। गन्ना बोने वाले किसानों को चीनी मिलें भी खाद देती हैं। इसकी कीमत का भुगतान गन्ना कटने के बाद किया जाता है।

खाद के साथ-साथ पानी भी कृषि के लिए आवश्यक है। पानी न मिला तो पौधे सूख जाएँगे। फसल मर जाएगी। खाद,पानी की अच्छी व्यवस्था होने से ही खेती की भरपूर पैदावार होती है।

हमारे प्रदेश की भूमि सब जगह एक ही नहीं है। कहीं पहाड़, कहीं पठार और कहीं समतल मैदान। पहाड़ों में आमतौर पर सिंचाई का प्रबंध नहीं हो पाता। घाटियों की जमीन में दूर से पानी लाकर सिंचाई की जाती है। यद्यपि वहाँ की खेती वर्षा पर निर्भर है।

पठारी भूमि, जैसे– बुन्देलखण्ड.आदि में बाँध बनाकर नदियों का और बरसात का पानी रोकते हैं। इनसे नहरें निकालकर सिंचाई की जाती है।

प्रदेश के शेष मैदानी भाग में सिंचाई के साधन हैं– नहरें, नलकूप और कुएँ। बड़ी-बड़ी नदियों, जैसे– गंगा, यमुना, शारदा, रामगंगा आदि से नहरें निकाल कर दूर-दूर तक उनका जाल बिछाया गया है। इसी तरह से जहाँ नहरों का पानी नहीं पहुँचता, वहाँ जगह-जगह ट्यूबवेल (नलकूप) बनाए गए हैं। इनसे सिंचाई होती है। बहुत से किसान अपने निजी नलकूप बनाकर या पम्पिंग सेट लगाकर भी सिंचाई करते हैं। जिनके पास जमीन कम है, वे कुओं में रहट लगाकर सिंचाई कर लेते हैं।

सिंचाई के निजी साधन बनाने के लिए सरकार की ओर से ऋण और छूट की सुविधा भी प्राप्त है। इसके लिए ब्लाक से सम्पर्क करना चाहिए।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. हमारे देश में आजीविका का मुख्य साधन क्या है ?
2. कृषि की उपज बढ़ाने के लिए क्या-क्या बातें जरूरी हैं ?
3. खेत में खाद देना क्यों आवश्यक है ?
4. रसायनिक खादों के उपयोग में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
5. रसायनिक खादों के साथ-साथ अन्य देशी खादों का इस्तेमाल क्यों जरूरी है ?
6. हमारे प्रदेश में सिंचाई किन-किन तरीकों से होती है ?
7. सिंचाई के निजी साधन बनाने के लिए क्या सुविधा प्राप्त है ?

पाठ 3

हल बैल

कृषि हमारी जिन्दगी का आधार है। यदि खेती न हो तो आदमी की जिन्दगी दूभर हो जाएगी। एक समय था, जब हमारे पूर्वज खेती करना नहीं जानते थे। तब वे जंगलों में फल और कंदमूल खाकर अपनी गुजर करते थे। परन्तु जिस दिन से मनुष्य ने खेती करना सीखा, तभी गाँव और नगरों की नींव पड़ी। मनुष्य एक जगह रहने लगा। धीरे-धीरे खेती के नए-नए तरीके विकसित हुए। इसी का परिणाम है कि आज खेती से न केवल हमारे लिए भोजन प्राप्त होता है, अच्छी खेती करके हम अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं।

पहले जमीन अधिक उपलब्ध थी, क्योंकि उस पर निर्भर लोगों की संख्या कम थी। आबादी बढ़ने के साथ खेती के योग्य भूमि कम होती जा रही है। लेकिन अब ऐसे तरीके निकल आए हैं कि हम उन्हें अपनाकर कम भूमि में भी अधिक पैदावार ले सकते हैं।

इसका एक तरीका है— सघन खेती। सघन खेती का अर्थ है— खेत में एक साथ ऐसी फसलें बोना जिनमें से कुछ जल्दी पकती हैं और कुछ देर में, जैसे— आलू, गन्ना, अरहर, धान आदि। यह भी ध्यान में रखना पड़ता है कि खेत अधिक दिन तक खाली न रहे। साल में तीन फसलें आसानी से ली जा सकती हैं, जैसे— रबी, खरीफ और जायद की फसलें।

अच्छी खेती के लिए उचित खाद और पानी तो आवश्यक है ही, खेती के अच्छे औजारों का भी बड़ा महत्त्व है। बड़े-बड़े किसान अब ट्रैक्टर रखने लगे हैं। ट्रैक्टर से काम बहुत जल्दी होता है, लेकिन यह बहुत महँगा यंत्र है, और कम रकबे के लिए बेकार है। इसीलिए हमारे यहाँ पहले जो हल काम में आता था, उसका फल छोटा होता था और उससे गहरी जुताई नहीं हो पाती थी। अब लोहे के नए-नए हलों का आविष्कार हो चुका है। उनसे गहरी जुताई होती है, अलग-अलग फसलों की बुवाई के लिए उन्हीं के अनुसार जमीन तैयार की जा सकती है। ऐसे भी हल बन चुके हैं, जिनसे मिट्टी पलटी जाती है, निराई की जाती है। हल के पीछे चोंगा बाँध कर बुवाई की जाती है।

हल को बैल खींचते हैं। बैल न हों तो खेती नहीं हो सकती। बैल और भी काम में आते हैं। उन्हें बैलगाड़ी में जोतकर किसान अनाज ढोता है, खाद ले जाता है, अपनी उपज बेंचने बाजार ले जाता है। अनाज माड़ने का काम भी बैलों से लिया जाता है। इस तरह से बैल किसान का जीवन साथी है, इसलिए बैल अच्छी नस्ल के होने चाहिए। कृत्रिम गर्भाधान से अच्छे बछड़े प्राप्त किए जा सकते हैं।

जिन लोगों के पास जमीन नहीं है, अच्छे बैल रखकर वे भी अपनी जीविका कमा सकते हैं। वे बैलगाड़ी में या ठेले में बैलों को जोतकर किराये से आमदनी कर सकते हैं।

बैल अच्छी नस्ल का हो, यह तो जरूरी है ही, उसकी उचित देखभाल की भी उतनी ही आवश्यकता है। उसे संतुलित चारा मिलेगा, वह नीरोग रहेगा, तभी काम कर सकेगा। इसलिए सूखे चारे के साथ बैल को हरा चारा, रातिब आदि भी नियमित रूप से मिलना चाहिए। पशु बीमार न पड़े इसके लिए समय-समय पर टीके लगाए जाएँ और कभी बीमार पड़ जाए तो इलाज का तुरन्त प्रबंध किया जाय।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. खेती का आरम्भ होने से पहले मनुष्य अपना पेट कैसे पालता था ?
2. खेती का आरम्भ हो जाने से मनुष्य के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?
3. अब खेती के लिए जमीन कम क्यों पड़ने लगी है ?
4. सघन खेती से आप क्या समझते हैं ?
5. अच्छी खेती के लिए किन-किन चीजों की जरूरत होती है ?
6. मशीनी औजारों के बाद भी हल हमारी खेती के लिए इतना उपयोगी क्यों है ?
7. हल खींचने के अलावा बैल से और क्या-क्या काम लिया जाता है ?
8. बैलों की देखभाल में किन-किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है ?

पाठ 4

गाय दूध

पशु पालन किसान का एक प्रमुख धंधा है। खेती के लिए भी, और आमदनी के लिए भी। इस दृष्टि से गायों का विशेष महत्त्व है। उनसे दूध मिलता है और खेती करने के लिए बैल भी। खाद के लिए और गैस संयंत्र के लिए गोबर भी मिलता है। जिनके पास खेती नहीं है, वे गो-पालन करके अपनी रोजी-रोटी चलाते हैं। लोग अधिक गाएँ पालकर दूध का तथा बैल बेंचने का व्यापार भी करते हैं। गाय का दूध स्वास्थ्यवर्द्धक होता है, इसलिए गायों की देख-रेख पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

नस्ल सुधार

यहाँ देशी गाएँ बहुत कम दूध देती हैं। अतः अब उन्नत नस्ल की गाएँ पाली जाने लगी हैं। इस समय फ्रिजियन (जिसकी पीठ पर काली-काली चित्ती होती है) और जरसी गाएँ पाली जाती हैं। ये देशी गायों से कई गुना अधिक दूध देती हैं। ये गायें बहुत महँगी हैं। अतः अब देशी गाय को ही जर्सी गाय में बदलने का तरीका अपनाया जाने लगा है। ब्लॉक पर सरकार ने पशुसेवा और कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र खोले हैं। इन केन्द्रों पर जर्सी साँड़ के वीर्य से देशी गाय का कृत्रिम गर्भाधान कराया जाय। फिर उसकी बछिया का भी इसी तरह कृत्रिम गर्भाधान कराया जाय। इस तरह छठीं पीढ़ी तक आते-आते देशी गाय जरसी गाय के रूप में बदल जाती है। जरसी के साँड़ भी अब खेती के काम में आ रहे हैं।

अब पशुसेवा केन्द्रों में ग्राम सभाओं को साँड़ देने की व्यवस्था हो गई है। यदि गाँव के लोग चाहें तो अपनी सभी गायों की छै-सात वर्षों में नस्ल सुधार सकते हैं। ये साँड़ ग्राम-सभा को कम कीमत में मिल जाते हैं और उन्हें वापस करने पर रुपये वापस मिल जाते हैं।

गायों का चारा

गाय से अधिक दूध प्राप्त करने के लिए अच्छे चारे का इंतजाम जरूरी है। अच्छी किस्म के चारे में जई, रियोज्वार, एम. पी. चरी, सुबबूल और बरसीम मुख्य हैं। इनके साथ ही गायों को गेहूँ, चना, ज्वार की भूसी, मूँगफली, महुवे, सरसों और अलसी की खली भी देनी चाहिए। इससे दूध बढ़ता है और गायें स्वस्थ रहती हैं।

चारे के सबंध में विशेष जानकारी के लिए ग्राम विकास अधिकारी से संपर्क करना चाहिए।

गाय की बीमारी

गायों को आमतौर पर गलाघोंटू, लँगड़िया, पोकनी और खुरपका रोग होता है। जब गाय में किसी रोग के लक्षण दिखाई दें तो उसे तत्काल पशु सेवा केन्द्र पर ले जाना चाहिए। यदि गाय ले जाने की स्थिति में नहीं है तो पशु चिकित्सालय के डाक्टर को तुरन्त घर पर बुलाना चाहिए। सरकारी पशु चिकित्सालयों में जानवरों का इलाज कराने पर कुछ ही पैसे खर्च होते हैं। बीमारी से बचाने के लिए गाय को समय पर टीका भी लगवा लेना चाहिए।

गायों के रखरखाव पर भी उचित ध्यान देना जरूरी है। उनके रहने का स्थान साफ और हवादार हो, नीचे की फर्स थोड़ी ढलवाँ होनी चाहिए, जिससे मल-मूत्र न रुके। जाड़े के दिनों में ठंड से बचाने की भी व्यवस्था करनी चाहिए। चरही और नाँदें पक्की हों और उनकी रोज सफाई की जाए।

गाय खरीदने के लिए आई. आर. डी. योजना के अन्तर्गत लघु कृषकों को एक चौथाई छूट पर, सीमान्त कृषकों को तिहाई छूट पर और अनुसूचित जाति के किसानों को आधी छूट पर ऋण दिया जाता है। इस संबंध में विशेष जानकारी के लिए ग्राम विकास अधिकारी से संपर्क करना चाहिए।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. गाय पालने से क्या-क्या लाभ हैं ?
2. देशी गायों की नस्ल सुधारने के लिए क्या-क्या करना चाहिए ?
3. गायों को आमतौर पर क्या-क्या बीमारियाँ होती हैं ?
4. गायों के रख-रखाव में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
5. गाय खरीदने के लिए सरकार की ओर से क्या सुविधा दी जाती है ?

पाठ 5

आम अनार केला

हमारे जीवन में फलों का बहुत महत्त्व है। इनसे हमें कई तरह के पौष्टिक तत्त्व प्राप्त होते हैं। तरह-तरह के फलों का स्वाद भी अलग-अलग होता है। ये बाजार से खरीद कर खाने में बहुत महँगे पड़ते हैं। आजकल की बढ़ती हुई महँगाई में थोड़ी आमदनी वाले व्यक्तियों के लिए खरीद कर फल खा पाना संभव नहीं है। यदि खेतों में या घर के आस-पास की खाली जगह में फलदार वृक्ष लगा लिए जायँ तो मौसम के अनुसार नित्य ही पूरे परिवार को फल खाने को मिल सकते हैं। घर के आस-पास की खाली जगह में पेड़ लग जाने से घर की सुंदरता भी बढ़ जाती है। आम, केला, पपीता और अमरूद ऐसे फल हैं, जिन्हें हर कोई घर पर आसानी से उगा सकता है।

आम

आम बहुत ही स्वादिष्ट एवं पौष्टिक फल है। अपनी मिठास, स्वाद और गुणों के कारण इसे फलों का राजा कहा जाता है। आम खून साफ करता है। इसमें पर्याप्त मात्रा में विटामिन 'ए' और 'सी' होता है। इसके प्रयोग से पुरानी से पुरानी रतौंधी ठीक हो जाती है। आँखों की रोशनी बढ़ती है। कच्चे आम को आग में भून कर तैयार किया हुआ शर्बत लू से रक्षा करता है। आम के बौर से ऐसी दवा तैयार की जाती है, जो खाँसी,पित्त व कफ को दूर कर देती है। इसके पत्तों की धूनी देने से हिचकियाँ तथा गले की अन्य बीमारियाँ दूर हो जाती हैं। कच्चे आमों से अचार, चटनी, अमचुर और मुरब्बा तथा पके आम से अमरस बनता है।

कम जगह में लगाने के लिए कलमी आम के पौधे लगाना ही उचित होता है। ये छोटे होते हैं और कम जगह घेरते हैं। ज्यादा जगह में देशी आम भी लगाये जा सकते हैं। अधिक मात्रा में लकड़ी प्राप्त करने के लिए देशी आम अधिक उपयुक्त रहता है। काली मिट्टी, जलोद मिट्टी और दोमट मिट्टी में आम की पैदावार अच्छी होती है।

साधारणत: आम के पौधों में दिसम्बर से मार्च तक बौर आते हैं। इस समय पाला पड़ना, बदली होना या वर्षा होना आम की फसल के लिए बहुत हानिकारक होता है। कभी-कभी तो वर्षा और लगातार बदली के कारण पूरी की पूरी फसल नष्ट हो जाती है।

पौधे लगाने से पहले गड्ढे खोद लेने चाहिए। गड्ढे की मिट्टी में 10 किलो गोबर की खाद, 250 ग्राम हड्डी का चूरा और सवा किलो राख मिलाकर पुनः भर देना चाहिए। इससे पौधे की बढ़वार अच्छी होती है।

जब तक आम के पौधों में फल न आने लगें, तब तक पौधों को थोड़े-थोड़े दिनों के अन्तर से पानी देते रहना चाहिए। उनमें नमी बनी रहना आवश्यक है। जब पौधे फलने लगें, तब उनमें सिंचाई करने की आवश्यकता नहीं रहती। वर्षा का जल ही उनके लिए पर्याप्त है।

आम का बल्गी, सफेद फूँगा, तना छेदक, आम की मक्खी, दीमक आदि कीट और पाउडरी मिल्डयू तथा विशुष्क अग्र, नामक कवक आम की फसल को भारी नुकसान पहुँचाते हैं। इनका प्रकोप होने पर विशेषज्ञों की सलाह लेकर दवा का छिड़काव करना चाहिए।

बीजू अथवा देशी जाति के पौधे सात-आठ वर्ष में और कलमी पौधे पाँच-छः वर्ष में फल देने लगते हैं। सामान्यतः आमों के पकने का समय मई से लेकर जुलाई का होता है।

अनार

यदि आम फलों का राजा है तो अनार भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। अनारदाने का रस बड़ा ही गुणकारी माना गया है। यह ठंडा और बलवर्धक होता है। कफ, पित्त, खाँसी, हृदयरोग, पेट की जलन, बुखार और गले के रोग में अनार का प्रयोग दवा के रूप में किया जाता है। यह पेट के कीड़े मारने में भी सहायक है। पेचिश को रोकने के लिए अनार का छिलका विशेष गुणकारी है। इसके पेड़ की छाल चमड़ा रँगने के काम में लायी जाती है। फूलों की गिरी हुई पंखुड़ियाँ भी रँगाई के काम में आ जाती है।

केला

केला भारत में आदिकाल से ही लोकप्रिय है। यह स्वादिष्ट तथा पौष्टिक फल है। इसमें विटामिन बी, सी, डी, ई और पोटैशियम, कैल्शियम तथा फास्फोरस आदि पोषक तत्त्व पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। कच्चे केलों का उपयोग सब्जी के रूप में भी किया जाता है।

केले की फसल के लिए बलुई अथवा दोमट भूमि और गर्म जलवायु अधिक उपयुक्त होती है। जहाँ केले के पौधे हों, वहाँ पानी नहीं रुकना चाहिए। केले के पौधे लगभग ६० सेंटीमीटर गहरे गड्ढे खोदकर लगाने चाहिए। पौधे लगाने के तीन सप्ताह बाद नीचे की मिट्टी हटाकर गोबर की खाद भर देनी चाहिए। वर्षा के आरम्भ में हर पौधे में आधा किलो सुपरफास्फेट डाल देने से फसल अच्छी होती है। प्रमुख जातियाँ हैं– मूसा सैपियन्टम, मूसा पैराडिसियाका, मूसा एक्यूमिनाय और मूसा बल्बीसियाना।

थोड़े-थोड़े समय बाद पौधों को सींचते रहना चाहिए, जिससे बराबर नमी बनी रहे। एक बार फल तोड़ लेने के बाद उस पौधे को काट देना चाहिए, क्योंकि केले का पौधा एक बार ही फल देता है।

प्राय: देखा गया है कि केले के एक पौधे से कई पौधे निकल कर बढ़ने लगते हैं, जिन्हें देखकर किसान बहुत प्रसन्न होते हैं, परन्तु निराशा तब होती है जब उसमें फल नहीं लगते। यदि लगते भी हैं तो नाममात्र को। पर्याप्त मात्रा में फल लेने के लिए केवल मुख्य पौधे को ही रखना चाहिए। शेष निकलने वाले पौधों को काट देना चाहिए। जब मुख्य पौधे में फल आने लगें, तब दूसरी शाखा को बढ़ने का अवसर देना चाहिए। इस प्रकार केले की अच्छी फसल ली जा सकती है। केले में जाति के अनुसार 10 मास से लेकर 14 मास की अवधि में फल आने लगते हैं।

आम, अनार, केला आदि फल स्वादिष्ट तो होते ही हैं, स्वास्थ्य की दृष्टि से भी इनका काफी महत्त्व है। मौसम के समय इनका सेवन करना चाहिए। बड़े पैमाने पर फलों की खेती करके आर्थिक लाभ भी उठाया जा सकता है। अच्छी नर्सरी प्राप्त करने तथा बागवानी के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए जिला फल उद्यान अधिकारी अथवा खण्ड विकास कार्यालय से सहायता ली जा सकती है। बैंकों द्वारा बागवानी के लिए आर्थिक सहायता मिलती है। इसके लिए भी खण्ड विकास अधिकारी द्वारा सहायता ली जा सकती है।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. हमारे भोजन में फलों का क्या महत्त्व है ?
2. आम का फल हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी है ?
3. आम से कौन-कौन सी चीजें बनायी जाती हैं ?
4. आम की बागवानी के लिए कौन-कौन सी बातें ध्यान में रखनी चाहिए ?
5. आम की फसल के मुख्य रोग व कीट कौन-कौन से हैं ? इनसे फसल को कैसे बचाया जा सकता है ?
6. अनार का फल हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी है ?
7. केले का उपयोग किन-किन रूपों में किया जाता है ?
8. केले की अच्छी उपज लेने के लिए किन-किन मुख्य बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
9. बागवानी से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी व सहायता कहाँ से प्राप्त की जा सकती है ?

पाठ 6

हथकरघा बुनाई

एक समय था, जब हमारे देश के जुलाहे बहुत बढ़िया कपड़ा तैयार करते थे। उस समय यहाँ का मलमल सारे संसार में मशहूर था। धीरे-धीरे मशीन का युग आया। कल कारखानों में अच्छे-अच्छे कपड़े बनने लगे। इससे जुलाहों या बुनकरों के काम को बहुत धक्का लगा। बुनकर इंसान हैं। वह मशीन की बराबरी तो कर नहीं सकते। उनके पास कारीगरी तो थी, पर साधन नहीं थे। बहुत से बुनकर अपने घरेलू काम को छोड़कर छोटी-मोटी नौकरियों में लग गए। फिर भी घर के पुराने लोगों ने इस धंधे को अपने हाथ और हथकरघे के बल पर किसी तरह जीवित रखा। अब सरकार इस धंधे को विशेष बढ़ावा दे रही है।

कपड़ा तैयार करने के लिए पहले सूत कातते हैं। सूत रुई से तैयार किया जाता है। रुई कपास से प्राप्त होती है। सूत की कताई चरखे से होती है। चरखे का एक विकसित रूप अम्बर चरखा है। इससे थोड़े ही समय में काफी सूत तैयार हो जाता है। खादी ग्रामोद्योग द्वारा अब अम्बर चरखों का विशेष प्रचार किया जा रहा है।

कारखाने में सूत की कताई मशीन द्वारा होती है। जुलाहे प्रायः मशीन से बने सूत का प्रयोग करते हैं। खादी ग्रामोद्योग केन्द्र हाथ से कते सूत से कपड़े तैयार करते हैं। बुनकर हथकरघों (हैंडलूम) पर कपड़ा बुनते हैं। खादी ग्रामोद्योग के कपड़े भी हथकरघे से ही बुने जाते हैं। मऊ, खलीलाबाद, गोरखपुर आदि हथकरघा उद्योग के मुख्य केन्द्र हैं।

मशीनों के पहले हथकरघा ही कपड़ा बुनने का एकमात्र साधन था। चरखे और हथकरघे के बल पर गांधी जी ने स्वदेशी भावना का आन्दोलन चलाया था। इसी के बल पर उन्होंने विदेशी कपड़ों के बहिष्कार का आन्दोलन चलाया था। आजादी की लड़ाई के समय चरखे को झंडे के मध्य में स्थान दिया गया था। यह हमारे स्वावलम्बन और स्वाभिमान का प्रतीक बन गया था।

आजकल हथकरघे से बने कपड़े मिल के कपड़ों का मुकाबला कर रहे हैं। बनारसी साड़ियाँ हथकरघे पर ही बुनी जाती हैं।

आजादी के बाद हमारी सरकार द्वारा ग्रामीण उद्योग धंधों को बढ़ाने के लिए अनेक कार्य किये गए हैं। हथकरघा उद्योग के विकास के लिए तथा बुनकरों की सहायता के लिए 'खादी ग्रामोद्योग बोर्ड' विशेष रूप से सक्रिय है। यह बोर्ड बुनकरों को कच्चा माल देने, हथकरघे के लिए ऋण देने, तैयार माल की खपत की व्यवस्था करने का काम कर रहा है। हथकरघे से बने कपड़ों पर सरकारी टैक्स की दर भी बहुत कम है। इससे हथकरघे पर बना कपड़ा मिल के कपड़ों की अपेक्षा सस्ता भी पड़ता है।

सूत और हथकरघे से हमारे देश की बहुत बड़ी आबादी को रोजगार की सुविधा प्राप्त है। गाँव की महिलाएँ काफी संख्या में सूत कातने का काम करती हैं। अपने खाली समय में किसान भी यह काम आसानी से कर लेता है।

सच तो यह है कि सूत, चरखा और हथकरघा न केवल बुनकरों वरन् गाँव और शहर के बहुत से नर-नारियों के लिए रोजी-रोटी का साधन बना हुआ है।

चर्चा के लिए प्रश्न :

1. कुटीर उद्योग में हथकरघा उद्योग का क्या महत्त्व है ?
2. हथकरघा उद्योग के लिए सूत कहाँ से मिलता है ?
3. हथकरघा उद्योग के लिए खादी ग्रामोद्योग बोर्ड से क्या सहायता मिलती है ?
4. गांधी जी के स्वदेशी आन्दोलन में खादी और हथकरघे का क्या महत्त्व था ?
5. गाँव के लोगों की आजीविका में हथकरघे का क्या महत्त्व है ?

पाठ 7

ऊन रोजगार नौकरी

आजीविका के लिए हर आदमी कोई न कोई काम करता है। अधिकतर लोग खेती करते हैं। कुछ नौकरी करके अपना जीवन निर्वाह करते हैं। लेकिन नौकरी सबको नहीं मिल सकती। खेती की आमदनी भी सब को बराबर नहीं होती। जिनके पास कम जमीन है, वे तो मुश्किल से गुजर-बसर कर पाते हैं।

ऐसे किसान,जिनका निर्वाह खेती से नहीं हो पाता, वे साथ में कोई रोजगार करके अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। जिनके पास अधिक जमीन है, वे भी इससे लाभ उठा सकते हैं।

ऊन का रोजगार एक ऐसा रोजगार है जो खेती के साथ-साथ किया जा सकता है। खेतिहर मजदूर भी इसे अपनाकर अच्छी तरह से अपनी गुजर-बसर कर सकते हैं। ऊन, भेड़ों से प्राप्त होती है। प्रदेश के जिन हिस्सों की जलवायु भेड़ पालन के लिए ठीक है, वहाँ भेड़ पालना आर्थिक दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण धंधा है। एक भेड़ से वर्ष भर में लगभग सात सौ ग्राम ऊन प्राप्त हो जाती है। भेड़ों की कई नस्लें होती हैं। ऊन के लिए कौन-सी भेड़ सबसे अच्छी होती है, इसकी जानकारी पशु विकास अधिकारी देते हैं।

अधिकतर ऊन उत्पादन करने वाले उसे बेंच देते हैं। इस ऊन की खरीद निजी कारखाने वाले भी करते हैं। खादी ग्रामोद्योग विभाग की ओर से भी इनकी खरीद की जाती है। ऊन बेचने से पहले उसकी छँटाई की जाती है। उत्तम रेशे वाली ऊन अलग कर ली जाती है, जिससे वह भी कम अच्छी ऊन के भाव न बिक जाए। भेड़ों से ऊन उतारने में भी सावधानी बरतनी चाहिए।

ऊन से कारखानों में विभिन्न प्रकार के वस्त्र बनते हैं। लेकिन घरेलू उद्योग के रूप में भी ऊन का बड़ा महत्त्व है। घर पर चर्खे से या तकुए से ऊन कात कर उसका धागा तैयार किया जाता है, फिर उससे घर पर ही बुनाई करके कंबल, लोई, स्वेटर, मफलर, मोजे दस्ताने, कालीन आदि बनाए जाते हैं। अब ऊन की घरेलू बुनाई की मशीनें भी आ गई हैं: इनसे काफी लाभ होता है।

ऊन उद्योग को बढ़ावा देने में खादी ग्रामोद्योग विभाग महत्त्वपूर्ण मूल्य अदा कर रहा है। उसकी ओर से थोक भाव पर ऊन खरीदकर कातने वालों को दी जाती है और उचित

मजदूरी देकर काता हुआ ऊन खरीद लिया जाता है। फिर इस ऊन से विभिन्न प्रकार के वस्त्र बनाए जाते हैं। ऊन का उद्योग करने वालों को परामर्श और प्रशिक्षण देने की भी व्यवस्था है। सरकार की ओर से भी एकीकृत ग्राम विकास विभाग, जिला उद्योग विभाग और जवाहर रोजगार योजना के अन्तर्गत ऊन उद्योग के लिए अनुदान दिया जाता है।

रोजगार बढ़ाने की और भी कई योजनाएँ हैं, जैसे– कुक्कुट पालन, दुग्ध उत्पादन, मधुमक्खी पालन आदि। इनके लिए बैंकों से कम ब्याज पर ऋण मिल जाता है। अनुसूचित जाति के लोगों को विशेष आर्थिक सुविधाएँ दी जाती हैं। उन्हें पाँच हजार रुपये तक के ऋण पर पचास प्रतिशत अनुदान दिया जाता है।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. ऊन का रोजगार कौन-कौन कर सकते हैं ?
2. अच्छी नस्ल की भेड़ों की जानकारी कहाँ से प्राप्त करेंगे ?
3. ऊन से क्या-क्या चीजें बनती हैं ?
4. ऊन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए खादी ग्रामोद्योग विभाग क्या-क्या सुविधाएँ देता है ?
5. ऊन उद्योग के अतिरिक्त आमदनी बढ़ाने के लिए और क्या-क्या रोजगार अपनाए जा सकते हैं ?

पाठ 8

औरत ओढ़नी

हमारे समाज में नारी का स्थान बहुत ऊँचा है। औरत और पुरुष परिवार रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। गाड़ी चलने के लिए दोनों पहियों का ठीक होना जरूरी है। गाँवों में प्राय: कहा जाता है— 'बिन घरनी घर भूत का डेरा।' जिस घर में घरनी यानी गृहिणी नहीं है, वह घर भूत के डेरे के समान हो जाता है।

पहले समझा जाता था कि औरतों का काम चूल्हा-चौका करना, घर की सफाई करना और बच्चों की देखभाल करना ही है, किन्तु अब जमाना बदल चुका है। उनका काम चूल्हा-चक्की, चौका-बर्तन और बच्चों की देखभाल तक ही सीमित नहीं है। वे अब पढ़ने-लिखने, खेलकूद, सामाजिक और राजनैतिक कार्यों में भी भाग लेने लगी हैं। अत: अब पुरुषों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि घर के कामकाज में औरतों का हाथ बटाएँ। इससे औरतों को पढ़ने-लिखने तथा सामाजिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा, साथ ही औरतों और पुरुषों में समानता की भावना भी विकसित होगी। वे एक-दूसरे के काम काज में समान भागीदारी का अनुभव करेंगे। इससे औरतों में हीनता की भावना भी दूर होगी और उनकी तरक्की का रास्ता खुल जाएगा।

किसान और मजदूर वर्ग की औरतें खेती-बारी के काम में भी हाथ बँटाती हैं। खाली समय में वे चरखों से सूत कातती हैं तथा सिलाई-बुनाई का काम भी करती हैं।

गाँव में मनाए जाने वाले त्योहारों में भी स्त्रियों का बहुत बड़ा योगदान होता है। होली, दीवाली और रक्षाबंधन के अलावा औरतें तीज, करवाचौथ, लाल छठ और जिउतिया का व्रत रखती हैं। इन अवसरों पर वे घर कीं सफाई करती हैं और घर को अच्छी तरह से सजाती हैं। त्योहारों के मनाने में उनका बहुत बड़ा हाथ रहता है।

महिलाओं की उन्नति के लिए अब परिवार कल्याण केन्द्रों की स्थापना की जा रही है। इन केन्द्रों पर उन्हें परिवार कल्याण की बातें बताई जाती हैं। यहाँ बच्चों के स्वास्थ्य की देख-भाल के लिए भी जानकारी दी जाती है। अशिक्षित स्त्रियों और पुरुषों की शिक्षा के लिए गाँव-गाँव में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चलाए जा रहे हैं। महिला प्रशिक्षण केन्द्रों में उन्हें कढ़ाई-सिलाई की शिक्षा दी जाती है।

अब महिलाएँ जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। पढ़ाई-लिखाई, खेलकूद, शिल्प, चित्रकारी, समाज-सेवा, शासन-प्रशासन आदि क्षेत्रों में वे अपनी कुशलता का परिचय दे रही हैं। आवश्यकता इस बात की है कि उन्हें तरक्की करने के लिए हर प्रकार के अवसर प्रदान किए जाएँ।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. परिवार में नारी का क्या महत्त्व है ?
2. अब महिलाओं का कार्य-क्षेत्र किस तरह बढ़ गया है ?
3. त्योहारों और उत्सवों को मनानें में स्त्रियों का क्या योगदान होता है ?
4. स्त्रियों को आगे बढ़ाने में पुरुषों का क्या कर्त्तव्य है ?
5. महिलाओं की उन्नति के लिए किस प्रकार की संस्थाएँ काम कर रही हैं ?

पाठ 9

गाँव सरपंच

गाँव में पंचायतों की परम्परा बहुत पुरानी है। पंचायतों के द्वारा ही गाँव के छोटे-मोटे झगड़े निपटा लिए जाते थे।पहले की पंचायतें जातिगत आधार पर होती थीं। विभिन्न जातियों के फैसले उन्हीं जातियों की पंचायतों में किए जाते थे, लेकिन अब इनका स्वरूप बदल चुका है।

अब पूरे गाँव की पंचायत एक होती है, जिसका निर्माण गाँव के सभी वर्ग के लोग मिल कर करते हैं। ग्राम पंचायत का चुनाव गाँव सभा द्वारा किया जाता है। जिन व्यक्तियों की उम्र 18 वर्ष या इससे ऊपर होती है, वे ग्राम सभा के आजीवन सदस्य होते हैं। पागल, कोढ़ी, और अदालत से सजा पाए लोग इस सभा के सदस्य नहीं हो सकते।

गाँव सभा के सभी सदस्य मिलकर एक सभापति का चुनाव करते हैं। सभापति को ही ग्राम प्रधान कहा जाता है। ग्राम प्रधान का चुनाव पाँच साल के लिए होता है। उसकी मदद के लिए ग्राम सभा के सदस्य गुप्त मतदान द्वारा कुछ अन्य सदस्य चुनते हैं। इन सदस्यों की संख्या जनसंख्या के आधार पर 7 से 15 तक होती है। इन्हीं सदस्यों में से एक उप-प्रधान चुना जाता है। शेष सदस्य पंच कहलाते हैं। प्रधान, उप-प्रधान तथा अन्य पंचों को मिलाकर ग्राम पंचायत कहा जाता है। इस प्रकार एक ही गाँव में ग्राम सभा और ग्राम पंचायत दो संस्थाएँ होती हैं। ग्राम प्रधान दोनों सभाओं का प्रधान होता है। ग्राम पंचायतों की सहायता के लिए एक सरकारी कर्मचारी होता है, जिसे पंचायत सेवक कहते हैं। वह पंचायत के अभिलेख रखता है।

7–8 ग्राम पंचायतों को मिलाकर एक न्याय पंचायत का गठन होता है। न्याय पंचायत का प्रमुख सरपंच कहलाता है। गाँव के छोटे-मोटे झगड़ों का निपटारा न्याय पंचायत द्वारा ही कर लिया जाता है। इससे लोग वकीलों के चंगुल और अदालतों के चक्कर लगाने से बच जाते हैं।

गाँव के विकास और उन्नति की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत की होती है। इसके लिए उसे धन की आवश्यकता होती है। पंचायतों के पास धन के अनेक साधन हैं। वह दुकान व घर पर टैक्स लगा सकती है। हाट, बाजार, इक्के, ताँगे, किराये पर चलने वाली गाड़ियों पर कर लगाती है। पट्टे पर भूमि देती है। सिंघाड़ा लगाने अथवा मछली पालने के लिए तालाबों को नीलाम करती हैं। इसके बाद भी यदि धन की कमी पड़े तो वह जिला परिषद

व शासन से अनुदान माँग सकती हैं। ग्राम पंचायत की जो आमदनी होती है, उससे वह निम्नलिखित विकास कार्य कर सकती है :

1. गाँव की सड़कों को बनवाना, उनकी सफाई करवाना और उन पर प्रकाश की व्यवस्था करना।
2. गाँव के लोगों के लिए चिकित्सा तथा शुद्ध पानी की व्यवस्था करना।
3. कुओं, तालाबों आदि का निर्माण एवं उनकी देख-रेख करना।
4. सार्वजनिक चरागाहों की व्यवस्था करना तथा पशुपालन में सहायता करना।
5. जन्म, मृत्यु और विवाह का विवरण रखना।
6. प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था करना।
7. हाट व मेले की व्यवस्था करना।
8. मृतकों के संस्कार के लिए स्थान का प्रबन्ध करना।
9. पंचायत के भवनों की सुरक्षा व देख-रेख करना।

इन सभी कार्यों के अतिरिक्त पंचायतें कुछ अन्य कार्य भी करती हैं, जैसे— पुस्तकालय, वाचनालय खुलवाना, मनोरंजन केन्द्र, प्रदर्शनी, वृक्षारोपण, खेल कूद आदि का प्रबन्ध और पशु चिकित्सालय एवं ग्राम उद्योग के कार्यों में सहायता आदि।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी चाहते थे कि हमारे गाँव, अपना शासन अपने आप करें। वह चाहते थे कि गाँव का विकास हो और पंचायत से जन-जन में एकता और अखंडता का विचार जगे। बापू के इसी स्वप्न को साकार करने के लिए सरकार ने ग्राम पंचायतों को और अधिक मजबूत और प्रभावी बनाने का निर्णय लिया है। हर जाति और हर धर्म के लोग इसके सदस्य बनकर गाँव के विकास में अपना सहयोग दे सकते हैं। अब तो ग्राम पंचायतों में ३० प्रतिशत स्थान महिलाओं के लिए भी आरक्षित कर दिए गए हैं, जिससे विकास कार्यों में वे भी अपना बहुमूल्य सहयोग दे सकती हैं।

ग्राम पंचायत गाँव की खुशहाली और उन्नति के लिए एक सशक्त माध्यम है। हर ग्रामवासी का यह कर्त्तव्य है कि वह पंचायत के कार्यों में अपना सहयोग दे एवं एकता की भावना को मजबूत बनाये।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. गाँव में पंचायतों का क्या महत्त्व है ?
2. पुरानी पंचायतों और आज की पंचायतों में क्या अन्तर है ?
3. ग्राम सभा, ग्राम पंचायत और न्याय पंचायत का गठन कैसे हाता है ?
4. ग्राम पंचायत का चुनाव किस प्रकार होता है ?
5. ग्राम पंचायत की आमदनी के स्रोत क्या हैं ?
6. ग्राम पंचायत के प्रमुख कार्य क्या हैं ?

भाग : २

पाठ 1

भाषण एकता

हमारा देश एक लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र का अर्थ है– जनता द्वारा चुनी गई सरकार, अर्थात् सरकार का गठन जनता के द्वारा होता है। लोकतंत्र की दूसरी विशेषता है– व्यक्तिगत स्वतंत्रता। जिस तरह वह सरकार बनाने में अपना वोट देने के लिए स्वतंत्र है, उसी तरह वह अपना मत और विचार प्रकट करने के लिए भी स्वतंत्र है। वह अपने विचारों को प्रकट करने के लिए सभाओं में भाषण देता है और जनता को अपनी बात से सहमत करने की कोशिश करता है। लोकतंत्र में भाषण की स्वतंत्रता प्रत्येक नागरिक का अधिकार है।

लोकतंत्र में विचारों को प्रकट करने की स्वतंत्रता के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता भी बहुत जरूरी है। एकता से ही राष्ट्र की सुरक्षा होती है और हम विकास के पथ पर आगे बढ़ सकते हैं। एकता में बड़ा बल होता है। बड़े से बड़ा कार्य भी एकता से पूरा हो जाता है। एक-एक रेशा जोड़कर रस्सी बनती है, जिससे शक्तिशाली हाथी भी बाँध दिया जाता है। एक-एक बूँद से समुद्र बनता है, जिसमें अगाध जल भरा रहता है। इसी तरह भारत के सभी निवासी यदि एक होकर रहेंगे तो हमारी स्वतंत्रता, सुरक्षा और प्रगति पर कोई आँच नहीं आएगी।

हमारा देश एक विशाल देश है। इसमें अनेक धर्मों,जातियों, सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। यहाँ अनेक भाषाएँ भी बोली जाती हैं। वेश-भूषा भी नाना प्रकार की होती है, पर ये विभिन्नताएँ केवल बाहरी हैं। भीतर से हम सब एक हैं। सभी भारतीय हैं। एक ही भारत माता की हम संतान हैं। यही हमारी विशेषता है। यही हमारी एकता का प्रमाण है। हमको इस बात पर गर्व है कि धर्म, जाति, भाषा, वेश-भूषा की हमारी विविधता हमारी एकता में बाधक नहीं है, बल्कि वह हमें एकता के सूत्र में बाँधे रहती है। हमारा भारत एक रमणीय उपवन की भाँति है जिसमें नाना प्रकार के रंग-बिरंगे पुष्प खिले रहते हैं और उनके मेल से उपवन की शोभा बनी रहती है।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. हमारे देश में किस प्रकार की सरकार है ?
2. लोकतंत्र की क्या विशेषताएँ हैं ?
3. भाषण की स्वतंत्रता क्यों दी गई है ?
4. राष्ट्रीय एकता क्यों जरूरी है ?
5. एकता में बड़ा बल होता है। कैसे ?
6. विविधता में एकता की बात हमारे देश पर किस तरह लागू होती है ?

पाठ 2

झाड़ू सफाई लिपाई पुताई

मनुष्य की तीन मुख्य आवश्यकताएँ हैं– भोजन, कपड़ा और मकान। भोजन के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। वस्त्र न हों तो न हमारा तन ढक सकता है, और न हम जाड़ा-गर्मी से बच सकते हैं। इसी तरह से घर न हो तो हम फिर से खानाबदोश हो जायेंगे। घर है, तभी गृहस्थी है, साज-सामान है और आराम से रह सकते हैं, इसलिए मकान हर आदमी की अनिवार्य आवश्यकता है।

घर अच्छा हो, हवादार हो, उसमें ठीक रोशनी आती हो, यह जरूरी है। इसलिए घर के दरवाजे ऐसी दिशा में होने चाहिए, जहाँ रोशनी और हवा बेरोक-टोक मिल सके। रोशनी और हवा से घर के अन्दर का वातावरण साफ रहता है। कीड़े-मकोड़े कम पनपते हैं। बीमारियों का खतरा भी कम रहता है।

लेकिन घर का ठीक जगह पर और अच्छा बना होना काफी नहीं है। उसका सुख उठाने के लिए उसे ठीक रखना भी आवश्यक है। जहाँ लोग रहते हैं, वहाँ कुछ न कुछ गन्दगी होना स्वाभाविक है। बच्चे भी खाने-पीने में और खेलने में बहुत-सी चीजें बिखेरते रहते हैं, इसलिए हर घर में प्रातःकाल झाड़ू अवश्य लगनी चाहिए। हमारे देश में एक बहुत अच्छी आदत है। महिलाएँ घर की सफाई से ही अपना दिन शुरू करती हैं। वे जाले निकालती हैं और घर के हर कोने को अच्छी तरह झाड़ू लगा कर साफ करती हैं। यह आदत बनाए रखनी चाहिए। बड़ों की देखा-देखी बच्चे भी सीख जायेंगे। बच्चों को यह भी सिखाना चाहिए कि वे खाना ठीक जगह पर बैठ कर खाएँ,इधर-उधर घूम कर जूठन न गिराएँ। जूठे बर्तन एक जगह रखे जायँ। जगह-जगह जूठन गिरने से मक्खियाँ पनपती हैं और घर का वातावरण गन्दा हो जाता है।

हमारे गाँव में अधिकतर घर कच्चे होते हैं। उनको साफ रखने के लिए झाड़ू लगाना काफी नहीं होता। चलने-फिरने से फर्श उखड़ने लगती है, इसलिए सप्ताह में कम से कम एक दिन फर्श को गोबर और मिट्टी से अच्छी तरह लीपना जरूरी है। इसी तरह साल में एक बार दीवारों को भी लीपना चाहिए। फर्श और दीवारों को अल्पना बना कर और भी सुन्दर बनाया जा सकता है।

आमतौर पर घरों में खाना धुएँ वाले ईंधन से पकता है। इससे घर की छत, दीवारें और ऊँचाई पर रखा सामान काला पड़ जाता है। महिलाओं में होने वाली आँख की बीमारियों का बहुत बड़ा कारण भी यही धुआँ है इसलिए धुआँ बाहर निकालने के लिए छत में चिमनी लगाना बहुत जरूरी है। अब नये ढंग से धूम्ररहित चूल्हा का चलन हो गया है। इनको लगाना सबसे लाभदायक है।

घर की सफाई के साथ-साथ आस-पास की सफाई भी आवश्यक है। बर्तन माँजने की जगह अक्सर पानी जमा हो जाता है, उससे कीचड़ और गंदगी तो बढ़ती ही है, मच्छर भी पैदा हो जाते हैं। इसलिए इस पानी के निकास की ठीक व्यवस्था होनी चाहिए।

अक्सर गाँवों में बच्चे इधर-उधर शौच के लिए बैठ जाते हैं। इस आदत को सुधारना बड़ों की जिम्मेदारी है। वे निकट के खेत में कोई स्थान निश्चित करके बच्चों को वहीं बैठायेंगे तो धीरे-धीरे इधर-उधर बैठने की आदत छूट जाएगी। इसी तरह से पशुओं के बाँधने और गोबर आदि डालने का स्थान भी निश्चित होना चाहिए। घर का कूड़ा-करकट भी इधर-उधर न फेंक कर एक स्थान पर गड्ढा बना कर उसी में डालना चाहिए। इससे खाद का काम लिया जा सकता है। अपने घर का कूड़ा कभी गली, आँगन या दूसरे के घर के सामने नहीं डालना चाहिए।

इन मोटी-मोटी, लेकिन आवश्यक बातों का सब लोग ध्यान रखेंगे, तभी घर का और गाँव का वातावरण स्वच्छ रहेगा।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. मनुष्य की सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकताएँ क्या हैं ?
2. घर कैसा होना चाहिए ?
3. घर में नित्य झाड़ू लगाना क्यों जरूरी है ?
4. लिपाई-पुताई क्यों करनी चाहिए ?
5. घर को धुएँ से बचाने के लिए क्या करना चाहिए ?
6. आस-पास की सफाई में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

पाठ 3
ढोल डमरू चिमटा इकतारा

गाँवों में लोकगीत और वाद्य-यंत्र मनोरंजन के प्रमुख साधन हैं। मनोरंजन के साथ-साथ ये गीत और वाद्य हमें अपनी परम्परा और संस्कृति से भी जोड़े रहते हैं। इन गीतों और वाद्यों से जन-जीवन में आनंद, उल्लास, उमंग और सहयोग की भावना बनी रहती है।

गाँव में साँझ ढलते ही कहीं न कहीं से गीत के बोल फूट पड़ते हैं। गीतों में कजरी, चैता, बिरहा, कहरवा, लावनी, सोहर, नकटा, जोग, हिंडोला, फगुआ, पूजा या देवी के गीत, भजन-कीर्तन आदि अधिक प्रचलित हैं। बाजों में ढोल, डमरू, चिमटा, इकतारा, झाँझ, करताल आदि प्रमुख हैं। ढोलक की थाप, झाँझ की झनझनाहट, चिमटा और इकतारा की ध्वनि के साथ लोकगीतों के स्वर गूँजने लगते हैं और गाँव के लोग आनन्द से झूम उठते हैं। इन गीतों में उनके जीवन की झलक, बिरह-मिलन, नाते-रिश्ते और मानवीय संबंधों की झलक बड़ी ही स्वाभाविक, सहज भाव में मिलती है। इनके द्वारा हम अपनी लोक संस्कृति का परिचय प्राप्त कर लेते हैं।

एक साथ बैठकर गाना, बजाना और आनंद मनाना हमारे गाँवों की संस्कृति का प्राण है। इससे सामाजिकता और सद्भाव को बल मिलता है। लोकगीत हमें केवल परम्परा या अतीत से ही नहीं जोड़ते, बल्कि आज के जन-जीवन की समस्याओं पर भी उनसे प्रकाश पड़ता है। वे नवीन चेतना तथा जागरण का भी संदेश देते हैं। देशभक्ति और राष्ट्रीयता पर बने हुए लोकगीत जन-जीवन में राष्ट्रसेवा, त्याग, बलिदान और एकता की भावना का संचार करते हैं। ये लोकगीत आदर्श जीवन मूल्यों की रक्षा के प्रमुख साधन हैं।

लोकगीतों की परम्परा को बनाए रखना आवश्यक है। मनोरंजन के साथ-साथ सहयोग और एकता की भावना बनाए रखने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहता है।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. लोकगीतों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है ?
2. गाँवों में किस प्रकार से गीत प्रचलित हैं ?
3. लोकगीतों के मुख्य वाद्य-यंत्र क्या हैं ?
4. लोकगीतों से हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?
5. लोकगीतों की परम्परा को बनाए रखना क्यों आवश्यक है ?

पाठ 4

छठी उबटन ऐपण

बच्चे का जन्म पूरे परिवार के लिए आनंद का अवसर होता है। इस अवसर पर माता-पिता और परिवार के सभी लोग प्रसन्न होते हैं। वे अपनी प्रसन्नता तरह-तरह से प्रकट करते हैं। महिलाएँ गाना गाती हैं, बधावे बजते हैं, लोगों का मुँह मीठा कराया जाता है।

बच्चे के जन्म के बाद अनेक संस्कार किये जाते हैं, जैसे– छठी, नामकरण, अन्न-प्राशन, मुंडन आदि। छठी पहला संस्कार है। यह जन्म के छठे दिन मनाया जाता है। उस दिन माँ को सरसों का उबटन लगाया जाता है। वह स्नान करती है। बच्चे को भी स्नान कराया जाता है। उस दिन माँ प्रसूति-घर से बाहर निकलती है।

इस अवसर पर घर को लीपा-पोता जाता है और ऐपण बनाकर दरवाजों को सजाया जाता है। पास-पड़ोस को निमंत्रण दिया जाता है। लोग आते हैं और दावत का आनंद उठाते हैं। खूब नाच-गाना होता है। महिलाएँ सोहर गाती हैं। इसमें बच्चे के लिए मंगल कामना की जाती है।

घर को छठी के अतिरिक्त अन्य अवसरों पर भी ऐपण से सजाते हैं। शुभ और खुशी के अवसरों पर ऐपण देने की प्रथा है। ऐपण सूखे या गीले आटे से बनाए जाते हैं। आम तौर पर चावल के आटे से ऐपण देते हैं। महिलाएँ इसमें बड़ी कुशल होती हैं। वे अपनी उँगलियों की मदद से देखते-देखते बड़ी सुन्दर आकृतियाँ बना देती हैं। दरवाजों के अतिरिक्त दीवालों पर भी ऐपण बनाने की प्रथा है। इससे घर सुन्दर दिखाई देता है।

इसी तरह उबटन भी केवल छठी पर नहीं लगाया जाता, बल्कि बच्चे को नहलाने से पहले बराबर उबटन लगाया जाता है। इससे उसका बदन साफ और चिकना रहता है।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. बच्चे के जन्म पर परिवार के लोग अपनी प्रसन्नता किस तरह प्रकट करते हैं ?
2. बच्चे के कौन-कौन से संस्कार किए जाते हैं ?
3. छठी का संस्कार कैसे मनाया जाता है ?
4. ऐपण किस लिए बनाए जाते हैं ?

पाठ 5

ऋण अंगूर गृहवाटिका

हम सभी स्वस्थ रहना चाहते हैं। स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक भोजन का महत्त्व सबसे अधिक है। पौष्टिक भोजन में कई चीजें सम्मिलित हैं, जैसे– अन्न, तेल, तरकारियाँ आदि। और चीजें हम जमा करके रख सकते हैं, लेकिन तरकारियाँ जमा करके नहीं रखी जा सकतीं। उन्हें ताजा ही खाना होता है। ताजी तरकारियाँ बराबर मिलती रहें, इसका बहुत बड़ा साधन गृहवाटिका है।

गृहवाटिका का अर्थ है– घर की बगिया, अर्थात् मकान के पास की जमीन, जिसमें हम फल, सब्जी आदि उगाते हैं। घरों से लगी हुई कुछ न कुछ जमीन खाली होती है। शहरों में भी कहीं-कहीं कुछ जमीन होती है जिसका उपयोग गृहवाटिका के लिए किया जा सकता है। उत्साही लोग जमीन न होने पर गमलों, लकड़ी के बक्सों या पक्की छतों पर मिट्टी बिछाकर गृहवाटिका बना लेते हैं।

गृहवाटिका के अनेक लाभ हैं। इसमें हर मौसम के अनुसार सब्जियाँ उगाई जा सकती हैं। इससे घर के आसपास हरियाली बनी रहती है और बिना खरीदे हर मौसम में ताजी चीजें मिल जाती हैं।

गृहवाटिका से अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए कुछ सावधानियाँ बरतना आवश्यक है। पूरी वाटिका को कई हिस्सों में बाँट देना चाहिए, जिससे अलग-अलग चीजें बोने में सुविधा हो। बीच-बीच में आने-जाने के लिए रास्ता छोड़ना भी जरूरी है। इससे पानी देने, निराई-गुड़ाई करने और तैयार सब्जी निकालने में सुविधा होती है। जमीन को अच्छी तरह तैयार करके गोबर की सड़ी खाद और कुछ उर्वरक डालना चाहिए। अलग-अलग क्यारियों में अलग-अलग तरकारियाँ बोने के साथ-साथ एक ही तरकारी कुछ दिनों के अन्तर से बोई जाए तो वह आगे-पीछे तैयार होती रहती हैं और अधिक दिन तक काम आती हैं।

गृहवाटिका में मौसम के अनुसार तरकारियाँ बोई जाती हैं। जाड़ों में आलू, टमाटर, फूल और पातगोभी, मेथी, पालक, सोया, गाजर आदि बोते हैं। सितंबर से नवंबर तक इनकी बोवाई होती है और दिसंबर से मार्च तक इनकी फसल मिलती है। गर्मियों में भिंडी, बैंगन, लौकी, तुरई, मिर्च, अरबी, प्याज, लहसुन, कद्दू आदि बोया जाता है। लौकी, तुरई, शकरकंद, कद्दू, अरबी, लोबिया, बरसात में भी होते हैं।

अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए अच्छे किस्म के बीजों का ही इस्तेमाल करना चाहिए। पंतनगर के और राष्ट्रीय बीज निगम के बीज सबसे अच्छे होते हैं।

गृहवाटिका में तरकारियों के अलावा भी बहुत-सी चीजें पैदा की जाती हैं। क्यारियों के किनारे-किनारे केला, पपीता, नीबू आदि के पौधे लगाए जा सकते हैं। अंगूर की बेल लगाना बहुत फायदेमंद होता है। अंगूर की बेल अधिक स्थान नहीं लेती। इसे ऊपर चढ़ाकर फैला दिया जाता है। इससे परिवार को ताजे फल मिल जाते हैं।

यदि जमीन आदि हो तो अंगूर की खेती बड़े पैमाने पर की जा सकती है। अंगूर की कई किस्में हैं। बेदाना अंगूर सबसे अच्छा होता है। इसकी बाजार में खूब खपत होती है। इसकी खेती के लिए बैंकों से ऋण भी मिलता है। जिनके पास जमीन हो, वे अंगूर की खेती करके अच्छा लाभ कमा सकते हैं।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. साग-सब्जी का हमारे स्वास्थ्य के लिए क्या महत्त्व है ?
2. प्रतिदिन ताजी सब्जी कैसे प्राप्त हो सकती है ?
3. गृहवाटिका किसे कहते हैं ?
4. गृहवाटिका की देखरेख कैसे करनी चाहिए ?
5. गृहवाटिका के क्या-क्या लाभ हैं ?
6. गृहवाटिका में सब्जी के अतिरिक्त क्या-क्या पैदा किया जा सकता है ?
7. अंगूर की खेती के लिए क्या सुविधाएँ प्राप्त हैं?

पाठ 6

शिक्षा ज्ञान पत्र

व्यक्ति के विकास के लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है। शिक्षा से ही हमें ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान से ही हम अपना काम अधिक कुशलता से कर सकते हैं। शिक्षा और ज्ञान के बिना व्यक्ति का पूरा विकास नहीं हो सकता।

जिन्हें शिक्षा नहीं मिलती, वे अपनी उन्नति का सही रास्ता नहीं खोज पाते। उन्हें अपने अधिकार और कर्त्तव्यों का भी पूरी तरह से ज्ञान नहीं हो पाता, इसीलिए वे गरीब बने रहते हैं और विभिन्न साधनों का उपयोग भी नहीं कर पाते। इसलिए हम सबको साक्षरता; शिक्षा और ज्ञान-प्राप्ति की ओर ध्यान देना चाहिए। इससे हर व्यक्ति आगे बढ़ेगा और जब व्यक्ति आगे बढ़ेगा तभी समाज और देश का भी विकास होगा।

गद्यांश

शिक्षा हमारे लिए तरह-तरह के रोजगारों का रास्ता खोल देती है। उससे हमें अपने पैरों पर खड़े होने की प्रेरणा मिलती है। शिक्षित व्यक्ति में आत्मविश्वास अधिक होता है। वह हर परिस्थिति में अपने लिए रास्ता निकाल लेता है। शिक्षा से व्यक्ति की बुद्धि विकसित होती है। वह जो कुछ करता है, सोच-समझकर करता है। इससे उसकी कार्यात्मक और व्यावसायिक कुशलता बढ़ती है।

शिक्षा से हमारे अंदर जागृति आती है। हम छुआछूत, जाति-पाँति, अंधविश्वास आदि बुराइयों से बचते हैं, इसलिए सामाजिक सुधार और देश की प्रगति के लिए शिक्षित होना और ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है।

१.

शिक्षा स्त्री और पुरुष दोनों को ही समान रूप से मिलनी चाहिए। शिक्षा पाकर स्त्री समाज के हर काम में अपनी भागीदारी निभा सकेगी। तभी स्त्री और पुरुष मिलकर समाज और देश को तरक्की के रास्ते पर ले जा सकेंगे।

हमारे देश में लगभग ६५ प्रतिशत नर-नारी अभी निरक्षर हैं। सरकार इन्हें साक्षर बनाने के लिए अनेक प्रयत्न कर रही है। इसके लिए बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के साथ-साथ प्रौढ़ों को शिक्षित बनाने के लिए देश भर में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोले जा रहे हैं। इन केन्द्रों में स्त्री और पुरुष दोनों को शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था है। इनकी शिक्षा को सतत् बनाये रखने के लिए ''जन शिक्षण निलयम्'' कार्यक्रम की योजना भी आरम्भ की गयी है। इनके माध्यम से नवसाक्षर व्यक्तियों को पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए मिलती हैं।

शिक्षा से सुनकर समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की योग्यता प्राप्त होती है। शिक्षित स्त्री-पुरुष अपनी बात लिखकर ठीक ढंग से प्रकट कर लेते हैं। वे अपने सगे सम्बंधियों को पत्र लिखकर अपना समाचार भेजते हैं। इसी प्रकार उनसे प्राप्त पत्रों को पढ़कर उनका कुशल मंगल जान लेते हैं। दूर रहने वाले अपने सगे-सम्बंधियों से पत्र के द्वारा हम संपर्क बनाये रखते हैं। शिक्षा के अभाव में हमें पत्र लिखवाने और पढ़वाने के लिए दूसरों की सहायता लेनी पड़ती है। इसमें अनेक कठिनाइयाँ होती हैं, इसलिए प्रत्येक स्त्री-पुरुष को पत्राचार में कुशलता प्राप्त कर लेनी चाहिए।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. हमारे जीवन में शिक्षा का क्या महत्त्व है ?
2. पढ़ने-लिखने से क्या लाभ हैं ?
3. पढ़े-लिखे और अनपढ़ व्यक्ति में क्या अन्तर है ?
4. पत्र का क्या महत्त्व है ?
5. सबको शिक्षित करने के लिए सरकार ने कौन-कौन सी योजनाएँ चलाई हैं ?